NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

राष्ट्रीय काव्यधारा

B.H.D.E.-142

B.A. Genral - 6th Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* M.A. Hindi, B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© **Copyright Reserved with the Publishers only.**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

राष्ट्रीय काव्यधारा

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1-2

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	आधुनिक युग की भूमिका	1
2.	आधुनिक युगीन परिस्थितियाँ	9
3.	आधुनिक युग का वैचारिक आधार	22
4.	राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का विकास	39
5.	नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना का विकास	49
6.	भारतीय साहित्य में नवजागरण एवं राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति	62
7.	राष्ट्रीयता के विकास में आधुनिक भारतीय साहित्य का योगदान	72
8.	मैथिलीशरण गुप्त और उनकी कविता	82
9.	माखनलाल चतुर्वेदी और उनकी कविता	92
10.	सुभद्रा कुमारी चौहान और उनकी कविता	102
11.	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	112
12.	रामधारी सिंह 'दिनकर' और उनकी कविता	119

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

13. श्यामनारायण पाण्डेय और उनकी कविता 126

14. काव्य-वाचन एवं विश्लेषण : भारतवर्ष की श्रेष्ठता, हमारा उद्भव, हमारे पूर्वज, आर्य स्त्रियाँ 134

15. काव्य-वाचन एवं विश्लेषण : हमारी सभ्यता 140

16. काव्य-वाचन एवं विश्लेषण : पुष्प की अभिलाषा, कैदी और कोकिला 147

17. काव्य-वाचन एवं विश्लेषण : प्यारे भारत देश, अमर राष्ट्र, दीप से दीप जले 154

18. काव्य-वाचन एवं विश्लेषण : झाँसी की रानी 160

19. काव्य-वाचन एवं विश्लेषण : विप्लव गायन 167

20. काव्य-वाचन एवं विश्लेषण : हिमालय, समर शेष है, कलम आज उनकी जय बोल 174

21. काव्य वाचन एवं विश्लेषण : हल्दीघाटी द्वादश सर्ग 180

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

राष्ट्रीय काव्यधारा

B.H.D.E.-142

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं तीन की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे,
वे स्वार्थ-रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-136, 'व्याख्या-11'

(ख) इस शान्त समय में,
अंधकार को बेध, रो रही क्यों हो?
कोकिला बोलो तो!
चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीज
इस भांति बो रही क्यों हो?
कोकिला बोलो तो!

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-150, 'व्याख्या-11'

(ग) आज मुक्ति के अरमानों ने
मिलकर यों ललकारा है
ओ सब सोने वालो, जागो,
गूंज रहा नक्कारा है!
कैसी रात? कहां के सपने
यह नव प्रभात पधारा है!
ऐसे हंसते-से प्रभात का
तुम करने सम्मान उठो,
उठो, उठो ओ नंगों भूखों,
ओ मजदूर किसान उठो।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत कविता बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' द्वारा रचित है तथा नंदकिशोर नवल द्वारा सम्पादित पुस्तक 'स्वतंत्रता पुकारती' में संकलित है। यह कविता मजूदरों-किसानों को सम्बोधित करके लिखी गयी है तथा इसमें कवि ने देश को जागरण का संदेश दिया है। इस कविता की रचना के समय अंग्रेजों का शासन था और देश को आजाद कराने के लिए आंदोलन चल रहे थे। इस कविता में कवि देश के मजदूर-किसानों में आजादी की भावना और जोश भरने के लिए कहता है कि देश से परतंत्रता का बोझ जल्द ही खत्म होगा और नये समाज का निर्माण होगा। तुम्हें इसके स्वागत के लिए तैयार हो जाना चाहिए। कवि मजदूरों-किसानों को कभी भारत के गौरवशाली अतीत की याद दिलाता है, तो कभी उसकी कर्मठता का है।

व्याख्या–कवि देश के गरीब किसानों मजदूरों को ललकारते हुए कहता है कि हे नंगे-भूखे लोगो! यह मानव समाज तुम्हारे ही श्रम से आगे बढ़ा है, तुम्हारे ही बल पर मानव जाति अभिमान करती है। तुम उठो और देखो कि देश में आजाद होने की इच्छा जाग उठी है, चारों ओर जनजागरण का आंदोलन छिड़ चुका है, स्त्री-पुरुष सभी के मन में आजादी के लिए आगे बढ़ने का उत्साह जाग चुका है। परतंत्रता का अंधेरा अब छंटने वाला है स्वतंत्रता की सुबह होने वाली है। अतः स्वतंत्रता के प्रभात का हंस कर स्वागत करो।

विशेष–1. कविता की भाषा परिष्कृत और परिमार्जित है।

2. रूपक अलंकार का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है।

3. वीर रस की छटा है।

4. सामासिक पदबंधों से कविता की भाषा में गंभीर काव्यात्मकता आ गयी है।

5. उद्‌बोधन का काव्य शिल्प मजदूरों-किसानों में आत्म गौरव और जागरूकता की चेतना पैदा करने में सक्षम है।

6. राष्ट्रीयता की चेतना के साथ इसमें मजदूर किसान चेतना का स्वर भी शामिल है।

(घ) मेरे नगपति! मेरे विशाल!
रे, रोक युधिष्ठिर को न यहां,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गाण्डीव-गदा
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
हर-हर बम का फिर महोच्चार।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत कविता प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य संग्रह 'हुकार' में संकलित है। यह कविता सन् 1933 में लिखी गई थी। राष्ट्रवादी धारा के कवि दिनकर अंग्रेजों की पराधीनता से देश को आजाद कराने के लिए देश की जनता में राष्ट्रीयता और

www.neerajbooks.com

देश प्रेम की भावना जगाने हेतु यह कविता रची। गहरी समाधि में लीन हिमालय को जगाने के बहाने इस कविता में देश की जनता को जगाने का प्रयास किया गया है।

व्याख्या–हे मेरे नगपति! तुम जागो और देखो कि तुम्हारा प्यारा देश किस तरह वीरान होता जा रहा है तुम चाहे युधिष्ठिर जैसे धीर को स्वर्ग जाने दो, किंतु अर्जुन और भीम को उनके धनुष और गदा के साथ लौटा दो। भगवान शिव से तांडव नृत्य करने के लिए कहो ताकि हर बम के महोच्चार से धरा एक बार गूंज उठे और सारा आलस्य दूर हो। कवि तपस्वी हिमालय से कवि कहता है कि यह समय तप करने का नहीं है। तुम भी मौन त्यागकर उठो और सिंहनाद करो। यह नया युग तुम्हें जगा रहा है।

विशेष–1. हिमालय का मानवीकरण किया गया है।

2. हिमालय की तुलना चिर समाधि में लीन तपस्वी से की गयी है।

3. सामासिक शब्द-पदों के प्रयोग से कविता में अर्थगौरव की सृष्टि हुई है।

4. इस कविता में हिमालय को जगाने के बहाने जनता को जगाने का प्रयास किया गया है।

(ङ) बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया गया फिर ठहर गया।
विकराल बज्र-मय बादल-सा,
अरि की सेना पर घहर गया।।
भाला गिर गया, गिरा निशंग,
हर टापों से खन गया अंग।
वैरी-समाज रह गया दंग,
घोड़े का ऐसा देख रंग।।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-182, 'व्याख्या-6'

प्रश्न 2. आधुनिक युग का वैचारिक आधार तैयार करने में भारतीय जीवन-दृष्टियों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-26, 'भारतीय जीवन दृष्टियां'

प्रश्न 3. राष्ट्रीय चेतना से आप क्या समझते/समझती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-50, 'राष्ट्रीय चेतना से अभिप्राय'

प्रश्न 4. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में अभिव्यक्त नारी सम्मान की भावना को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-83, 'नारी सम्मान की भावना'

प्रश्न 5. माखनलाल चतुर्वेदी का परिचय देते हुए उनके काव्य के रचना-शिल्प की विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-94, 'माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का रचना-शिल्प', पृष्ठ-101, 'भाषा-शैली'

प्रश्न 6. '' 'बालकृष्ण शर्मा नवीन' के काव्य में नवजागरण की अनुगूँज है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-113, 'नवजागरण'

प्रश्न 7. रामधारी सिंह 'दिनकर' की राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-124, प्रश्न 2

प्रश्न 8. राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से 'हल्दीघाटी' काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–कवि ने महाराणा प्रताप के साथ उनके स्वाधीनता सेनानियों की भावनाओं को 'हल्दीघाटी' रचना में चित्रित कर देश की जनता में मातृ-भूमि के प्रति असीम प्रेम को जगाया और देश के प्रति बलिदान देने की भावना को दृढ़ किया। 'जौहर' कविता में भी यही राष्ट्रीय भावना देखने को मिलती है। चित्तौड़ के सेनानियों को दिया गया राष्ट्र रक्षा के लिए उद्‌बोध-संदेश अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीय जनता को दिया जागृति-संदेश ही प्रतीत होता है। उन्होंने अपनी श्रेष्ठ संस्कृति और गौरवशाली इतिहास को भारतीय जनता के समक्ष राम, परशुराम, हनुमान, वशिष्ठ, महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे धर्मनिष्ठ, धीरोदात्त, आचारवान और पराक्रमी अवतारी पुरुषों आदि ऐतिहासिक चरित्रों के रूप में प्रस्तुत किया। 'शिवाजी' काव्य में शिवाजी राष्ट्र भावना और स्वदेश मुक्ति के लिए धर्मयुद्ध को उचित बताया है।

श्यामनारायण पाण्डेय का सम्पूर्ण साहित्य राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण है। कवि ने इतिहास और पुराण के अनुकरणीय चरित्रों का वर्णन करके स्त्री और पुरुष दोनों को त्याग, सदाचार, बलिदान आदि का पाठ पढ़ाने को प्रयास किया है।

श्यामनारायण पाण्डेय ने हिंदू राष्ट्रीयता और हिंदू संस्कृति को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक पौराणिक चरित्रों को केन्द्र में रखकर राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का प्रसार किया था। अकबर की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति ने राणा प्रताप का विरोध किया, जिसके कारण 'हल्दीघाटी' काव्य में इन्होंने मुस्लिम जनता और मुस्लिम शासन की आलोचना की। शिवाजी हिन्दू संस्कृति के पक्षधर थे, परन्तु अपने विजय अभियान के दौरान कभी भी उन्होंने किसी मस्जिद को क्षति पहुँच प्रयास नहीं किया। शिवाजी की यही निष्ठा और सदाचार जन-जन को प्रभावित करता था।

इस प्रकार, श्यामनारायण पाण्डेय ने ऐतिहासिक पात्रों के जरिए वर्तमान समाज कोअच्छे कर्म करने और सद्‌मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हुए राष्ट्र के लिए मर-मिटने का उत्साह जगाने का प्रयास किया।

प्रश्न 9. सुभद्राकुमारी चौहान की भाषाशैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-106, 'सुभद्रा कुमारी चौहान की भाषा-शैली'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

राष्ट्रीय काव्यधारा

आधुनिक युग की भूमिका

1

परिचय

उन्नीसवीं शताब्दी के नवजागरण के साथ आधुनिक युग के आरंभ से राष्ट्रीयता को एक नया अर्थ मिला। राजनीतिक स्वाधीनता के लिए संघर्ष का सम्बन्ध सामाजिक न्याय और समता के लिए संघर्ष से था। बीसवीं शताब्दी में ऐतिहासिक संघर्ष के साथ उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष तीव्र होने से आधुनिक युग को व्यापकता और पूर्णता मिली। इस युग में समाजवाद को नया आयाम मिला।

एक ही समय पर सभी देशों और भाषाओं के साहित्य में आधुनिक युग का आरंभ नहीं हुआ। भारतीय साहित्य के संदर्भ में आधुनिक युग की पहचान नवजागरण और स्वाधीनता संघर्ष से है। प्राय: सभी देशों में आधुनिक युग स्वतंत्रता की माँग के साथ प्रारम्भ हुआ। आधुनिक युग के पूर्व साहित्य एक ढर्रे पर बंधी भावधारा से ओतप्रोत था, किंतु आधुनिक युग में यह अधिक स्वच्छन्द दिखाई देता है। भारतीय साहित्य में आधुनिक युग आने के पीछे मुक्ति की व्यापक आकांक्षा थी। सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार के आंदोलन स्वाधीनता संघर्ष की चेतना के लिए प्रोत्साहन दे रहे थे। आधुनिक युग के भारतीय साहित्य में प्रकृति, मानव संबंध, जीवन के प्रति नया रूख साहित्यिक अभिव्यक्ति के साथ उस राजनीतिक-सामाजिक संदर्भ के कारण भी महत्त्वपूर्ण है, जिससे दूर होकर साहित्य सृजन असंभव हो जाता है। आधुनिक युग के विकास की प्रक्रिया में गद्य और प्रेस की स्थापना का महत्त्वपूर्ण योगदान है। गद्य के उदय से नयी साहित्यिक शैलियों के साथ वैज्ञानिक विचार चेतना का व्यापक प्रसार भी संभव हुआ। इस युग में साहित्य के पाठक-समाज का निरंतर विस्तार हुआ।

अध्याय का विहंगावलोकन

आधुनिक युग का महत्त्व

आधुनिक युग का सीमांकन

यूरोप में आधुनिक युग का आरंभ पंद्रहवीं-सत्रहवीं शताब्दी से माना जाता है, किंतु हमारा आधुनिक युग यूरोप के आधुनिक युग से भिन्न है। यूरोप की आधुनिक चेतना औद्योगिक पूंजीवाद से महाजनी पूंजीवाद तक की यात्रा के विकास से सम्बद्ध है। भारत के संदर्भ में आधुनिक युग के विकास में सामंतवाद के अवशेष अभी भी हैं। नवजागरण सुधार के प्रयत्न, आधुनिक विज्ञान का उदय, सामंतवाद का विघटन, उपनिवेशीकरण, औद्योगिक क्रांति आदि आधुनिक युग के कमोवेश सभी जगह यही प्रमुख लक्षण थे। 1789 में फ्रांस की राज्य क्रांति से उभरी स्वतंत्रता, समानता, नागरिक अधिकार आदि धारणाएँ आधुनिकता की चेतना की पहचान बनीं। भारतीय साहित्य में आधुनिक युग की पहचान राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष और नवजागरण की चेतना से दिखती है। भारत में 19वीं शताब्दी के आरंभ में अंग्रेजों के शासन स्थापित करने के क्रम में आधुनिक शिक्षा और शिक्षित वर्ग में एक नयी चेतना का उदय होने से राष्ट्रीय भावना, समाज सुधार और सामंतवाद विरोधी चेतना के रूप में उभरकर सामने आई। बीसवीं शती तक प्रति-उपनिवेशीकरण तथा साम्राज्यवाद विरोध की चेतना भी राष्ट्रीय भावना का अंग बन गई।

आधुनिक युग की विशिष्टता

उन्नीसवीं शताब्दी के नवजागरण के दौरान राष्ट्रीयता की अपनी अवधारणा विकसित करने का प्रयास भारतीयता की अपनी पहचान निश्चित करने वाला दौर था। एक ओर अतीत पर जोर देते हुए वैदिक युग की वापसी पर बल दिया जा रहा था, तो दूसरी ओर अतीत को पूरी तरह से छोड़कर पश्चिम के अनुगमन को उचित ठहराया जा रहा था। उन्नीसवीं शती के अंत तक विवेकानंद, ज्योतिबा फूले, रवींद्रनाथ आदि ने अतीत और वर्तमान के बीच एक सही वस्तुपरक और संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया। किंतु भविष्य के प्रति द्वंद्व बना ही रहा, जिसे 20 वीं शती के आरंभ 1917 की सोवियत क्रांति ने स्पष्ट कर दिया। सन् 1920 के आस-पास समाजवादी मंच की स्थापना, कम्युनिस्ट पार्टी का गठन तथा अन्य कई बातें कांग्रेस में इसी सच्चाई की द्योतक थी। प्रेमचंद, निराला, नजरूल, जोश महीलाबादी आदि ने इस दृष्टिकोण को साहित्य में अभिव्यक्त किया।

बीसवीं शताब्दी में हुए दो महायुद्धों ने मनुष्य की संवेदना, संबंध भावना और मूल्य भावना को प्रभावित किया। यह युग भारत के स्वाधीनता संघर्ष, नवजागरण, बौद्धिक दृष्टि का विकास, विश्व दृष्टि आदि के विकास का काल भी है। इस युग में साधारण मानव की

www.neerajbooks.com

प्रतिष्ठा का प्रश्न उभरा, जिसने आधुनिक युग के विकास के क्रम में समाजवाद और यथार्थवाद जैसी विचारधाराओं के उदय और विकास में सहायता की और यूरोप के सम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन के कारण आधुनिक राष्ट्रवाद और लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हुईं।

आधुनिक युग के विकास के क्रम में यूरोप का वर्चस्व क्षीण होने से अनेक उपनिवेशों को स्वतंत्रता मिली। आधुनिक भारतीय साहित्य में भी अनेक सामाजिक परिवर्तनों की चेतना ने आकार लिया।

आधुनिक साहित्य की मूल संवेदना

आधुनिक साहित्य इतिहास-दृष्टि, परम्परा का बोध, समग्र जीवन दृष्टि और वैज्ञानिक विवेक जैसी आधुनिक युग की विशेष ऐतिहासिक आवश्यकता का परिणाम था। हिंदी में आधुनिक युग के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने युग की समस्याओं को पहचानकर साहित्य की विषयवस्तु में युगान्तकारी परिवर्तन किए और गांधी जी से पहले ही स्वदेशी आंदोलन का सूत्रपात कर दिया था। राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष में उपनिवेशवाद विरोध का सजग प्रयत्न भी सहायक बना।

बंकिम चंद्र का 'आनंद मठ', मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती', हाली का 'मुसद्दस' आदि आधुनिक युग की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। राष्ट्रवाद से पूर्ण रचनाओं ने आधुनिक युग की समस्याओं और चुनौतियों के प्रति संवेदनशीलता जगाई। स्वाधीनता संघर्ष के दौर में प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में महत्त्वपूर्ण रोमांटिक कविता के लेखन के साथ राष्ट्रीय भावधारा के भीतर एक नयी स्वच्छन्द चेतना का विकास देखा गया। प्रेमचंद (रंगभूमि, गोदान), ताराशंकर बंद्योपाध्याय (गणदेवता), विभूति भूषण बंद्योपाध्याय (पथेर पांचाली) आदि की कृतियों में स्त्री की पीड़ा को स्वर मिलने के साथ आधुनिक युग की संवेदना व्यक्त हुई।

आधुनिक युग : राजनीतिक-सांस्कृतिक-साहित्यिक संदर्भ

आधुनिक युग : राजनीतिक संदर्भ

औद्योगिक क्रांति के कारण यूरोप में पूंजीवादी लोकतंत्र की नींव पड़ी, वहीं उद्योगों की जरूरतों के चलते और नये बाजार की खोज में एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमरीका के देशों को यूरोपीय देशों ने अपना उपनिवेश बनाया। पूंजीवाद के साथ स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के नये आदर्श भी आधुनिक शिक्षा के साथ इन देशों में भी आए, जिसने इन देशों में भी राष्ट्रवाद की भावना को दृढ़ किया।

पहले विश्वयुद्ध (1914) के पश्चात् यूरोप का प्रभुत्व धीरे-धीरे कम होने लगा और संयुक्त राज्य अमरीका, जापान जैसे देश मुख्य शक्ति के रूप में उभरने लगे। रूसी क्रांति (1917) और साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच संघर्ष तेज होने से पूंजीवादी व्यवस्था के अंत को मनुष्य के हित में माना गया। रंगभेद के कारण काले लोगों के दमन की प्रक्रिया शुरू हुई। महिलाओं ने बीसवीं शताब्दी में अमरीकी संविधान के अंतर्गत मताधिकार प्राप्त किया। भारत में स्वाधीनता आंदोलन प्रारम्भ होने से एशिया के दूसरे भागों में भी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की लहर उठी। दोनों विश्वयुद्धों के बीच संयुक्त राज्य अमरीका, रूस, जापान आदि शक्ति के प्रमुख केंद्र थे। रूस के अलग होने पर शांति प्रस्तावों की पहल में संयुक्त राज्य अमरीका की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। चीन की क्रांति (1911) में सुन यात सेन ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जर्मनी में फासीवाद की विजय ने दूसरे विश्वयुद्ध को जन्म दिया। दूसरा विश्वयुद्ध (1939-1945) सबसे अधिक विनाशकारी था। शीतयुद्ध के कारण अमरीका का महाशक्ति के रूप में उदय हुआ और आपसी संघर्ष भी बढ़ा। अमरीका-वियतनाम युद्ध ने लेखकों- कलाकारों को विशेष रूप से विचलित किया।

गांधी जी के राजनीतिक कार्यक्रमों के पीछे अहिंसा, सत्याग्रह जैसे महत्त्वपूर्ण विचार थे। नेहरू की गुटनिरपेक्षता जैसी नीतियों ने विश्व के आधुनिक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला। अनेक छोटे देशों के मुक्ति आंदोलन में नेहरू युग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

आधुनिक युग : सांस्कृतिक संदर्भ

रूसो, कांट, जान स्टुअर्ट मिल, हर्बर्ट स्पेंसर आदि। यूरोपीय विचारकों ने उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय नवजागरण को प्रेरित किया। उपनिवेशवादी दौर में जन्मे इस नवजागरण की अपनी सीमाएँ थीं। स्वाधीनता संघर्ष ने इस मानसिकता में गुणात्मक परिवर्तन किया।

यूरोपीय वैज्ञानिक-संस्कृति और भारतीय धार्मिक संस्कृति में टकराहट से भारत में नवजागरण का आरंभ 19 वीं शताब्दी में हुआ। भारतीय नवजागरण का केंद्र समग्र मनुष्य की कल्पना थी, जो राजा राममोहन राय (1772-1833) जीवन दर्शन में दिखाई देती है। 1828 में राजा राममोहन राय द्वारा ब्रह्म समाज की स्थापना से प्रेरणा लेकर महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज स्थापित हुआ। राममोहन राय ने सती प्रथा पर रोक लगवाने, हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए देश की जनता को शिक्षित करने, बहु-विवाह जैसी सामाजिक विकृति को मिटाने, अंतर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन देने तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार जैसे महत्त्वपूर्ण और युग-परिवर्तन के कार्य किये। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा विवाह और स्त्री-शिक्षा के लिए स्कूल-कॉलेज खोलने सम्बन्धी प्रयत्न किए। नवजागरण की प्रक्रिया में स्वामी दयानंद (1824-1883) ने आर्य समाज की स्थापना (10 अप्रैल, 1875) की और जातीय संकीर्णता के विरुद्ध एवं स्त्री शिक्षा के पक्ष कार्य किए। रामकृष्ण परमहंस (1836-1886) ने सामाजिक नवजागरण के लिए सभी धर्मों की मूलभूत एकता के विचारों को प्रश्रय दिया। विवेकानंद (1863-1902) ने रामकृष्ण के संदेश को यूरोप-अमरीका तक फैलाया और वेदांत दर्शन और हिंदू धर्म की नयी व्याख्या के लिए प्रसिद्ध हुए। 1873 में एनी बेंसेट ने थियोसोफिकल सोसायटी द्वारा जातिवाद जैसी संकीर्णताओं के विरुद्ध वातावरण बनाया। फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना (कलकत्ता/1800) ने नवजागरण के प्रसार के लिए अवसर दिया। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय तक नवजागरण की चेतना स्वाधीनता संघर्ष की चेतना के साथ घुलमिल चुकी थी।

आधुनिक युग की एक बड़ी सांस्कृतिक चिंता देश, प्रेम, राष्ट्रीय अस्मिता और विश्व-भावना के सामंजस्य से जुड़ी थी। सत्रहवीं-अठारहवीं सदी में अंग्रेज व्यापारियों द्वारा तैयार विश्व बाजार मानवीय स्वाभिमान के लिए चुनौती बना। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1908 में 'सरस्वती' में इसके प्रति चिंता प्रकट की है। रवीन्द्रनाथ और प्रेमचंद का साहित्य भी इसी गहरी विकलता का उदाहरण है। उस समय भारत में सामंतवाद की रूढ़ियाँ प्रबल थीं। वर्ण-व्यवस्था नये-नये रूपों में

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

चुनौती प्रकट कर रही थी। विज्ञान की स्वीकृति के लिए भी संघर्ष हो रहा था। महाराष्ट्र में ज्योतिबा फूले (1827-1890) ने नवजागरण की प्रक्रिया को तेज करने के साथ नवजागरण की दूसरी धारा के प्रवर्तन से प्रभुत्वशाली वर्ग को चुनौती दी। 1848 में उन्होंने निम्न जाति के लड़कों के लिए तथा 1851 में लड़कियों के लिए स्कूल खोला। उन्नीसवीं शताब्दी में ब्राह्मणेतरों को संगठित कर उन्होंने आंदोलन चलाया, उसी की अगली कड़ी बीसवीं शताब्दी में भीमराव अम्बेडकर कहे जा सकते हैं।

आधुनिक युग में गद्य का विकास सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में लगभग एक साथ हुआ। आधुनिक युग की नवीन विचारधारा का निर्माण मुद्रण कला के विकास, पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन, पाठक वर्ग के उदय, पूर्व-पश्चिम की संस्कृति के संबंध और संघर्ष मुक्ति संघर्ष की चेतना, दलितों-उपेक्षितों के उत्थान, सामाजिक न्याय एवं समता के लिए संघर्ष, सौन्दर्याभिरुचि में बदलाव, विश्व-भावना के विकास ने किया। भारतीय भाषाओं का आधुनिक साहित्य बताता है कि यूरोप के संपर्क से आधुनिक चेतना का विकास हुआ, तो उसी ने नये अवरोध भी उत्पन्न किये। आधुनिक भारतीय साहित्य आज विश्व साहित्य अभिन्न और महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसकी भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

आधुनिक युग : साहित्यिक संदर्भ

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक विश्व साहित्य का केंद्र यूरोप था। साम्राज्य विस्तार और उपनिवेश निर्माण द्वारा उसका संपर्क अफ्रीका, एशिया और अमरीका के साहित्य से हुआ। विश्व में आधुनिक युग की महत्त्वपूर्ण पहचान उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद विरोध की चेतना थी, जिसमें प्रेस ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रेस के कारण ही गद्य के नये रूपों और शैलियों को विकास का अवसर मिला। प्रेस के प्रचार में यातायात और संचार के साधनों ने सहायता दी। प्रेस ने साहित्य को प्रजातांत्रिक रूप दिया, जिससे साहित्य के केंद्र में साधारण जनता आई। यूरोपीय संपर्क के कारण उत्पन्न नए युग में अंग्रेजी शासकों, ईसाई मिशनरियों की भूमिका थी। श्रीरामपुर के मिशनरियों ने 1832 में भारत की लगभग चालीस भाषाओं में अपने धर्मग्रंथ छापे। उनमें बघेली, छत्तीसगढ़ी, कन्नौजी, भोजपुरी जैसी बोलियाँ भी थीं। प्रेस के आने से उपन्यास, कहानी, जीवनी, आत्मकथा आदि गद्य रूप उभरे। पत्र-पत्रिकाओं का प्रसार बढ़ा। शिक्षित जनता के उदय और नवजागरण में उनकी हिस्सेदारी से साहित्य की संवेदना में गुणात्मक अंतर आया।

आधुनिक युग का साहित्य : आंदोलन और शैलियाँ

आधुनिक युग की संवेदना को यूरोपीय उपन्यास ने विकसित होने में सहयोग दिया। उपन्यास ने उन्नीसवीं शताब्दी में गद्य की नयी विधा के रूप में आधुनिक समाज का यथार्थ चित्रण किया। तोल्सतोय के 'पुनर्जीवन' (1899) जैसे उपन्यास ने आधुनिक समाज की आलोचना करते हुए नयी चेतना या नये मनुष्य के जन्म की संभावना की ओर संकेत किया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861-1941) की कृति 'गीतांजलि' (1913) को राष्ट्रीय पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति के लिए नोबेल पुरस्कार मिला। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का अनेक विधाओं में उपलब्ध साहित्य आधुनिक युग की सच्ची संवेदना विकसित करने में सहायक सिद्ध हुआ। भारतीय समाज के बदलते रूपों को सार्थक झलक बंकिम, शरत चंद्र, फकीर मोहन, सेनापति, तकषी शिवशंकर पिल्लै, रवीन्द्रनाथ, प्रेमचंद आदि के उपन्यासों ने दी। स्वच्छन्दतावाद, प्रतीकवाद, बिम्बवाद, यथार्थवाद जैसे आन्दोलनों ने आधुनिक युग की संवेदना विकसित करने के लिए नयी शैलियों का आश्रय लिया। टी.एस. इलियट का साहित्य परम्परा और आधुनिकता के द्वंद्व को समझने में उनका 'द वेस्ट लैंड' (1922) सहायक है। हिंदी कवि जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' (1936) लिखकर आधुनिक मनुष्य के संकट की पहचान कराई, तो लैटिन अमरीकी कवियों, कथाकारों ने यूरोपीय आधुनिकता के समानांतर ठेठ देसी आधुनिकता को महत्त्व दिया।

आधुनिक युग में रूसी लेखक राष्ट्रीय अस्मिता और विश्व-भावना के गहरे संबंधों को लेकर चिन्तित रहे हैं। अफ्रीका का आधुनिक साहित्य उपनिवेशवाद विरोधी और राष्ट्रवादी है। व्यापक अर्थ में आधुनिक भारतीय साहित्य नवजागरण और स्वतंत्रता की चेतना से अनुप्राणित रहा है।

आधुनिक युग की मूल संवेदना

भारत पर विदेशी शासन के कारण राष्ट्रीयता और स्वाधीनता की भावना का उदय हुआ। अपनी पराधीनता के कारणों पर चिंतन ने समाज सुधार के आंदोलनों की शुरुआत की। एक ओर अतीत की गलत रूढ़ियों और परंपराओं से मुक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न किया, तो दूसरी ओर अपनी परंपरा के श्रेष्ठ मूल्यों की रक्षा का दायित्व भी ग्रहण करना नवजागरण की भावना थी।

राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना

राष्ट्रीय स्वाधीनता की चेतना के दौर में देश में उठती नयी जातीय राष्ट्रीयता की भावना को हाली का 'मुसद्दस' और भारतेंदु के नाटक व्यक्त कर रहे थे। प्रसाद के नाटकों, निराला की कविता और प्रेमचंद के उपन्यास अभिव्यक्ति दे रहे थे। विश्व परिप्रेक्ष्य में सामंतवाद की समाप्ति और पूंजीवाद के उदय से राष्ट्र जैसी अवधारणा का उदय माना जाता है। जिस प्रकार पूंजीवाद के विकास के साथ ही राष्ट्रीय आंदोलन का विकास माना जाता है, उसी प्रकार उपनिवेशवाद से भारत में नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन का विकास माना जाता है। राष्ट्रीय स्वाधीन चेतना आधुनिक युग की मूल संवेदना है, जो आधुनिकता जैसे मूल्य बोध के लिए उलझन भी पैदा करती हैं।

नवजागरण

उन्नीसवीं सदी के नवजागरण में हिंदुत्व के आग्रह के अलग-अलग रूप थे, जिसमे कहीं दृष्टि अधिक उदार थी और परम्परा के सार्थक ग्रहण को महत्त्व देती थी (ब्रह्म समाज, विवेकांनद), तो कहीं वैदिक हिन्दुत्व के पोषण पर अतिरिक्त बल था (आर्य समाज)। राजा राममोहन राय ने अपने समय की सांस्कृतिक चेतना को नवजागरण कहा, तो बंकिम चंद्र ने पंद्रहवीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन को सच्चे अर्थों में नवजागरण माना। डॉ. रामविलास शर्मा ने भक्तिकालीन आंदोलन को लोकजागरण कहा और उन्नीसवीं शताब्दी के जागरण को नवजागरण कहा। आधुनिक युग की बहुत सी विशेषताएँ, नयी संबंध भावना, नयी सौंदर्य दृष्टि आदि बंगाल के नवजागरण की ही देन है।

www.neerajbooks.com

मूल्यांकन

विश्व इतिहास में आधुनिक युग की शुरुआत से मानव सभ्यता के नये चरण की शुरुआत हुई और मनुष्य ने अपनी सोच के केंद्र में स्वयं मनुष्य को रखकर धर्म, भाग्य, राजा, पुरोहित, जाति, लिंग, नस्ल, भाषा, क्षेत्र के आधार पर मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव का विरोध किया। मनुष्य के बीच समानता के आदर्श को स्थापित कर लोकतंत्र के द्वारा एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली को विकसित किया गया।

आधुनिक युग का अवदान

उन्नीसवीं शताब्दी से बीसवीं शताब्दी के इस अंतिम दशक तक आधुनिक युग समस्याओं और चुनौतियों से घिरा रहा है। आधुनिक युग में पहली बार मनुष्य को सभ्यता के केंद्र में रखा गया और उसके बीच समानता पर बल दिया गया। उपनिवेशवाद विरोधी चेतना और राष्ट्रीय स्वाधीनता जैसी चेतना ने आकार ग्रहण किया। नवजागरण से मध्ययुगीन मानसिकता से मुक्ति, अनेक सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति, नयी प्रगतिशील विचारधारा, नयी संबंध भावना जैसी धारणाएं विकसित हुईं। आधुनिक युग को महत्त्वपूर्ण दलित और शोषित का मुक्ति के लिए संघर्ष, स्त्री की मुक्ति के लिए संघर्ष, सामाजिक न्याय और समानता के लिए संघर्ष, लोकतंत्र धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद के पक्ष में संघर्ष ने बनाया। यूरोपीय शिक्षा, प्रेस एवं पत्रकारिता के विकास ने नवजागरण को बल दिया।

आधुनिक युग के संदर्भ में भारतीय साहित्य की पहचान

आधुनिक युग में भारतीय साहित्य की एक अपनी नयी पहचान प्राप्त की। राजा राममोहन राय, माइकेल मधुसूदन दत्त, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय सरीखे साहित्यकार एवं समाज सुधारक नवजागरण के कारण ही राष्ट्रीयता के साथ अंतर्राष्ट्रीयता अथवा विश्व-भावना के विकास के लिए सचेष्ट थे। नवजागरण और स्वाधीन चेतना के लिए चलाये गए संघर्ष से स्वच्छंदतावाद और यथार्थवाद जैसी विचारधाराएं पनपीं। आधुनिकता के उदय और विकास में इंग्लैंड-अमरीका के साथ अफ्रीकी, एशियाई एवं लातीनी अमरीकी साहित्य ने भी आधुनिकता की चेतना को नया अर्थ दिया। एशियाई देशों के साहित्य की अंतर्वस्तु स्वदेशी ही रही, किंतु इन देशों का आधुनिक साहित्य मुक्ति की चेतना से संपन्न है। आधुनिक भारतीय साहित्य आधुनिकता और भारतीयता, आंचलिकता और लोकोन्मुखता तथा विश्वजनीनता से परिपूर्ण है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में आधुनिक युग का कब से माना जाता है–

(क) पंद्रहवीं शताब्दी से

(ख) बारहवीं शताब्दी से

(ग) बीसवीं शताब्दी से

(घ) उन्नीसवीं शताब्दी से

उत्तर–(घ) उन्नीसवीं शताब्दी से।

प्रश्न 2. आधुनिक युग को विशिष्ट पहचान देने वाले तीन प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिए–

उत्तर–भारतीय साहित्य में आधुनिक युग की पहचान राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष और नवजागरण की चेतना के साथ संभव हुई। 19वीं शताब्दी के आरंभ में जब अंग्रेजों के भारत में पैर जमने लगे और आधुनिक शिक्षा का प्रचलन आरंभ हुआ, उसके साथ-साथ यहाँ के शिक्षित वर्ग में एक नयी चेतना का उदय भी हुआ जो राष्ट्रीय भावना, समाज सुधार और सामंतवाद विरोधी चेतना के रूप में उभरकर सामने आई। बीसवीं शती तक आते-आते इसके प्रति-उपनिवेशीकरण तथा साम्राज्यवाद विरोध की चेतना भी जुड़ गई।

प्रश्न 3. आधुनिक साहित्य की मूल संवेदना को ध्यान में रखते हुए इन प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–

(क) आधुनिक साहित्य किन प्रमुख शर्तों या लक्षणों के साथ आधुनिक हुआ।

उत्तर–साहित्य को आधुनिक बनाने वाली स्थितियां आधुनिक युग की इतिहास-दृष्टि, परम्परा का बोध, समग्र जीवन दृष्टि और वैज्ञानिक विवेक जैसी विशेष ऐतिहासिक आवश्यकता का परिणाम थीं। आधुनिक साहित्य व्यापक अखिल भारतीय संदर्भ में लिखा गया, जिसका आधार नवजागरण और स्वाधीनता संघर्ष था। भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी में आधुनिक युग के प्रवर्तक थे, वे साहित्य की विषयवस्तु में युगान्तकारी परिवर्तन अपने युग की समस्याओं का आभास होने के कारण कर पाए। साधारणजन से उनका जुड़ाव था, जिस कारण साधारण लोगों पर वे लिख सकते थे। उन्होंने गांधी जी से पहले ही स्वदेशी आंदोलन का सूत्रपात कर दिया था। भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आधुनिक साहित्य के उदय के पीछे व्यापक ऐतिहासिक प्रयत्न है। उपनिवेशवाद-विरोध का सजग प्रयत्न राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष के अगले चरण में भी दिखाई देता है, जो विश्व भर में चल रहे उपनिवेशवाद विरोध की ही एक कड़ी था। भारत में आधुनिक साहित्य की चेतना का निर्माण करने वाले लेखकों में रवींद्रनाथ ठाकुर महत्त्वपूर्ण थे, उन्होंने भी माना था कि आधुनिक युग ने हमारे साहित्य को एक ओर राष्ट्रीय चेतना से, दूसरी ओर एक प्रकार की विश्व दृष्टि से सम्पन्न किया।

(ख) राष्ट्रीय अस्मिता जैसे प्रश्न से टकराने वाले किसी महत्त्वपूर्ण उपन्यास का नाम लिखिए।

उत्तर–आधुनिक युग की राष्ट्रीय चेतना का पक्ष लेने वाली महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं–बंकिम चंद्र का 'आनंद मठ', मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' और हाली का 'मुसद्दस'। ये सभी कृतियाँ साम्राज्यवाद का विरोध करती हैं। आधुनिक युग की समस्याओं और चुनौतियों के प्रति जवाहरलाल नेहरू की 'विश्व इतिहास की झलक' और 'भारत की खोज' जैसी कृतियां संवेदनशील बनाती हैं। हालांकि स्वाधीनता संघर्ष के दौर में प्राय: सभी भारतीय भाषाओं में महत्त्वपूर्ण रोमांटिक काव्य रचा जा रहा था, किंतु साथ ही राष्ट्रीय भावधारा के भीतर एक नयी स्वच्छन्द चेतना का विकास भी देखा गया। इन रचनाकारों में उर्दू के मुहम्मद इकबाल, हिंदी के निराला, बंगला के नजरूल इस्लाम, मराठी के केशवसुत, मलयालम के.जी. शंकर कुरूप, तमिल के सुब्रह्मण्य भारती आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। आधुनिक भारतीय उपन्यास के इतिहास में राष्ट्रीय अस्मिता जैसे सवाल से टकराने वाली अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं हैं, जैसे–रवीन्द्रनाथ का उपन्यास 'गोरा'। शरतचंद्र के उपन्यास सामंतवाद के दबावों के विरुद्ध विद्रोह को वाणी देने के साथ स्त्री की पीड़ा अथवा करुणा को भी आधुनिक युग के संदर्भ में मूर्त करते हैं। आधुनिक युग की

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com